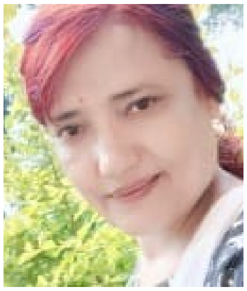

डॉ. सीमा विजयवर्गीय

1

प्यार का संसार है मेरी ग़ज़ल
ज़ुल्म का प्रतिकार है मेरी ग़ज़ल

सच अगर थोड़ा भी आहत हो गया
फिर वहाँ अंगार है मेरी ग़ज़ल

राह के अवरोधकों के वास्ते
एक पैनी धार है मेरी ग़ज़ल

दिन–महीने–साल सबको बाँधती
वक्त का अख़बार है मेरी ग़ज़ल

है फ़क़ीरों की दुआ इसको मिली
दर्द का उपचार है मेरी ग़ज़ल

रूह के तारों को झंकृत कर रही
सूफ़ियाना प्यार है मेरी ग़ज़ल

इक सरल बोली में सबसे बोलती
मेरा ही किरदार है मेरी ग़ज़ल

2

वो इक मसला ही सालों साल है जब
नहीं हाथों में रोटीदाल है जब

अकालों में ही मर जाएगा होरी
नज़र बादल की फिर से लाल है जब

बढ़ेगी रोज़ ही बेरोजगारी
सियासत की ही गहरी चाल है जब

यहाँ के बाग में क्या फूल होंगे
यहाँ सड़कों का ऐसा हाल है जब

बता कैसे सरल हो ज़िंदगी फिर
यहाँ जालों के भीतर जाल है जब

चलेगा फिर भला कैसे ये रिश्ता
वो दिल के साथ ही बेताल है जब

सताएँगी भला कैसे हवाएँ
बुना माँ का सुकोमल शाल है जब